साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 44, सितम्बर(प्रथम) , 2018

शीतांशु भारद्वाज का उपन्यासः एक और सीता

डा0 बंदना चंद

कथाकार शीतांशु भारद्वाज का एक और सीता उपन्यास तक्षशिला प्रकाशन से 1987 में प्रकाशित हुआ है। इसका आकार लघु है, इसमें 156 पृष्ठ हैं। आंचलिक पृष्ठभूमि पर लिखे गए इस उपन्यास में नायक शरद और नायिका जया के असफल प्रेम की कथा है।

उपन्यास की कथा का प्रारंभ शरद की मां द्रौपदी की बिमार अवस्था से होता है। पड़ोस की कुछ महिलाएं द्रौपदी की कुछ देर देखभाल करने के बाद अपने घरों में चली जाती हैं। शरद की अमीनगिरी में नई-नई नौकरी लगी होती है। वह पहली छुट्टी पर घर आता है तो अपनी मां को बीमार देखकर घबरा जाता है। शरद की मां उसके लिए अनेक सपने संजोती है। उसका पति मुरलीधर उसे सदैव अभावों में रखता है। पटवारी से कानूनगो बन जाने के बाद भी शराब पीकर अपनी पत्नी के प्रति हमेशा दुव्र्यवहार करता है। शराब और जुए के कारण वह अपने परिवार की जिंदगी बरबाद कर देता है और मरने पर भी उन्हें कर्ज में डुबा जाता है। द्रौपदी अपने बेटे का अच्छी तरह पालन-पोषण करती है। वह उस पर उसके पिता की परछाई भी नहीं पड़ने देती और उसे अच्छा इंसान बनाने की कोशिश करती है। द्रौपदी की बेटी नंदा अपने पिता के ऋण से उऋण होने के लिए अधेड़ उम्र की मोती राम मोतीराम से विवाह कर लेती है। छुटट्ी पूरी हो जाने के पश्चात् शरद अपनी बहन नंदा से मिलकर भिरणखेत जाता है:
"भिरणखेत और कुणखेत दोनों पड़ोसी गांवों मंे बरसों से ही सीमा विवाद चला आ रहा था। इसे लेकर उनमें खून-खराबा तक हो आया था। जब-तब गगास नदी के तट पर उनमें महाभारत होने लगता। उसके बाद फिर वे लोग कोर्ट-कचहरियों के चक्कर काटा करते। कुणखेत वाले दयानंद जी का लिहाज कर जाते, किंतु ज्यों ही वे सरकारी सेवा से मुक्त हुए उनकी पुरानी दुश्मनी फिर से बल पकड़ने लगी थी।"

भिरणखेत पहंुचने पर शरद अपने पिता के मित्र पांडेजी के घर जाता है। पांडे जी की बेटियां जय-विजया भी अपने बचपन के मित्र शरद के आने की खबर सुनकर छज्जे पर आकर खड़ी हो जाती हैं। जया-विजया की मां रुकमणी शरद को उसकी बहन नंदा के बारे में पूछती है

और अपनी बेटियों के लिए भी चिंतित हो जाती है। शरद सोचने लगता है कि जया की मगनी हो जाती है।

दिनभर जमीन की नाप-जोख के बाद वह अकेला शाम को लौटता है। उस अकेलेपन में उसे जया की याद आती है: "मटुवा तोक तक आते-आते चारों ओर चांदनी छिटक आई थी। वहां से शरद की निगाहें भिरणखेत के पनघट पर जा लगी। वहां एक छाया-सी डोल रही थी। उसे लगने लगा जैसे वह श्वेत-वसना कोई चांचरी हो। उसे बचपन में सुनी हुई उन कहानियों की याद आने लगी, जिनमें कहा जाता था कि चांदनी रातों को स्वर्ग की अप्सराएं धरती पर उतर आती हैं।" भयभीत होता हुआ वह आगे बढ़ने लगता है। तब पीछे से कोई उसे आवाज लगाता है। वह श्वेत वसना जया होती है। वे दोनों आपस में बातें करते हुए घर आते हैं। पांडेजी शरद को घर आये मेहमान से मिलाते हैं। वह मेहमान कैंड़ाधार के ठेकेदार गोवर्द्धन का इकलौता पुत्र धरणीधर होता है। शरद को धरणीधर अच्छा नहीं लगता है। पहली ही मुलाकात में वह उससे ऊबने लगता है। धरणीधर भी बात-बात में अपना बड़प्पन जताने लगता है।

शरद को भिरणखेत आए हुए महीने से अधिक हो जाता है। सावन का महीना होने के कारण चारों तरफ हरियाली और कुहरा छाया रहता है। हरियाले के त्यौहार के दिन शरद को अपनी मां और बहन की याद आती है। गगास नदी में बाढ़ आने के कारण वह घर नहीं जा पाता। वह कल्पना करता है कि मां और नंदा उसका इंतजार कर रहे होंगे। वह अत्यधिक उदास हो जाता है। वही दूसरी ओर रूकमणी भी शरद को देखकर अपने मृत पुत्र भैरव की याद में उदास रहती है। रुकमणी मौसी की उदासी का कारण शरद जया से पूछता है। वह बताती है: "पिछले वर्ष भी तो गगास में ऐसी बाढ़ आई हुई थी। बाएं तट पर किसी अज्ञात सैनिक का शव पड़ा हुआ था। जया उसे दुखद कहानी सुनाने लगी, चील-कौवों ने उस शव को नोंच-नोंच कर इतना विकृत कर डाला था कि उसे पहचाना तक नहीं जा रहा था। मां का विश्वास था कि वह भय्या ही रहे होंगे।" शरद उनके दुख में अपनी उदासी भूल जाता है।

अपना काम निबटा कर शरद छुट्टी लेकर घर जाने की तैयारी करता है। एक ओर उसे अपनी मां के पास जाने की खुशी होती है, दूसरी ओर अपनी प्रेयसी से बिछुड़ने का दुख होता है। छुट्टियां समाप्त होने पर शरद को विभाग की तरफ से पाली पछाऊँ वाली टुकड़ी में भेज दिया जाता है। वहां वह अपने जोड़ीदार मदन के साथ भंडरपुर गांव में नक्शों का मुआयना करने जाता है, जहां उसकी मूलाकात अपने ननिहाल आई हुई जया से होती है: "भटकोटी के सीढ़ीनुमा खेतों को फलांगता हुआ शरद नीचे जया की ओर ही चल दिया। ऊपर के खेत में पहंुचकर उसे एक शरारत सूझ आई। नीचे वाले खेत में कुछ गुनगुनाती हुई जया वहां सरसों के पौधें उखाड़ रही थी। शरद ने उसके पास एक कंकड़ फेंक दिया। वह वहीं खेत में दुबक गया।"

भंडरगांव से शरद अपना कार्य पूरा होने के बाद घर लौट जाता है। उसकी मां उसे बहू लाने की बात करती है तो वह अपनी पसंद के बारे में बताता है। मां और बेटे दोनों जया की कल्पना

करते हैं। इसके पश्चात् भिरणखेत और कुणखेत आपसी बैरभाव भुलाने के लिए रामलीला का आयोजन करते हैं। इस लीला में राम की भूमिका शरद और लक्ष्मण की भूमिका मदन निभाता है। दोनों पात्र पांडेजी के घर पर अपने संवाद याद करते हैं। जया अपनी मां को अपने और शरद के बारे में बताती है। पांडेजी भी जया का रिश्ता शरद के साथ तय करने के लिए खुश हो जाते हैं। मदन द्वारा शरद की उदासी का कारण पूछने पर वह बताता है:"क्या करूं भाई! शरद बोला, जबसे आंखों में सपने पालने लगा हूं, यही डर बना रहता है कि केाई उन्हें छीन न ले। मेरी आंखों मे एक उसी की छवि तो बसी हुई है।"

सीता स्वयंवर वाले दिन जया रास्ते में शरद को फूलमाला डाल देती है। धरणीधर के कारण जया का का मन आशंकित रहता है। लीला में राम-रावण युद्ध होता है। पर्दे के पीछे शरद को मारने की साजिश रची जाती है। धरणीधर हेड अमीन रुद्रदत्त को लालच देता है। लीला में बाजा बजाता हुआ ख्यालीराम पर्दे के पीछे चल रही साजिश को भांप लेता है, किंतु रुद्रदत्त उसे भी लालच देकर चुप करा देता है। पर्दा गिरते ही रुद्रदत्त शरद पर तलवार से प्रहार करने को तैयार होता है, तभी बीच-बचाव में आए हुए जनार्दन के गर्दन पर तलवार लग जाती है और उसका सिर धड़ पर लटक जाता है। ख्यालीराम ये सब देख लेता है। सभी लोग शरद को हत्यारा समझने लगते हैं।

शरद को हत्या के आरोप में अल्मोड़ा जेल भेज दिया जाता है। जया को इस घटना से गहरा आघात पहंुचता है। उस घटना के बाद पांडेजी जया का विवाह धरणीधर से करने के लिए राजी हो जाते हैं। जया आत्महत्या करने जाती है, किंतु विजया उसे बचा लेती है। अंततः जया अपने भाग्य के निर्णय को स्वीकार कर लेती है और उसका विवाह धरणीधर से हो जाता है। उधर अल्मोड़ा जेल में बंद शरद भी जया के ख्यालों में खोया रहता है। उसकी मां उस घटना के बाद से बीमार रहने लगती है। शरद का केस जितेंद्र जुयाल नामक वकील लड़ता है। कोर्ट में चल रही बहस से शरद की मां बेहोश हो जाती है। उसे अस्पताल ले जाते हैं। केस की सुनवाई के बाद शरद बरी हो जाता है और असली गुनहगार रूदद्रत्त को पकड़ लिया जाता है।

कोर्ट से छूटते ही शरद मां के पास अस्पताल जाता है। उसकी मां उसकी दयनीय दशा को देख कराहने लगती है और दम तोड़ देती है। मां के गुजर जाने के बाद मोतीराम जी उसे अपने घर ले जाते हैं और उसे अपनी जायजाद का संरक्षक बनाते हैं। विजया के विवाह का मोतीराम जी और शरद को निमंत्रण आता है। विवाह के दिन जया शरद से मिलने की कोशिश करती है: "जया छज्जे के परले किनारे पर खड़ी थी। वह अपने विवाह के वस्त्राभूषण पहिने हुई थी। उसकी मांग में सिंदूर था। उसे देखकर शरद के ओंठ लरज कर ही रह गए। हृदय में कहीं हूक-सी उठी। बिना मिले ही वह अंदर कमरे में आकर बिस्तर पर लेट गया।" बाद में शरद से मिलने पर जया शरद को शादी करने के लिए मनाती है किंतु शरद इंकार कर देता है।

वृद्धावस्था में मोतीरामजी के घर-आंगन में बच्चे की किलकारी गूंजने लगती है। उनका सारा कारोबार शरद संभालता है। कारोबार के सिलसिले में उसे हल्द्वानी जाना होता है। वहां वह जया के घर रुकता है। हल्द्वानी मंे एक दावत में धरणीधर और शरद भी शामिल होते हैं जहां धरणीधर को मारने की साजिश करते हुए दो लोगों की बातें शरद सुन लेता है। वे लोग धरणीधर के शराब में जहर मिला देते हैं, जिसे शरद देख लेता है और धरणीधर के हाथ से गिरा देता है। धरणीधर की जान बचाकर वह उसे घर लाता है: "तुम्हारा सुहाग-सिंदूर बचाकर लाया हूं जया! शरद ने जया के पास आकर उसे सारी बातें बतला दी।" जया उसके पैरो में गिरती है। वह उससे कहती है कि उसके उपकार के बदले उसे देने के लिए कुछ भी नहीे है। तब शरद कहता है: "सच्चा प्यार किसी का प्रतिदान नहीं मांगता जया ! देना ही चाहो तो अपना सारा दुख दर्द मेरी झोली में डालती जा।" अगले दिन शरद जाने लगता है। वह जड़मूर्ति की तरह खड़ी रह जाती है। शरद को जाते हुए देख वह भी उसके पीछे जाना चाहती है, किंतु अपने घर की लक्ष्मण रेखा पार नहीं कर पाती।

इस प्रकार इनका 'एक और सीता' उपन्यास उत्तराखंड के कुमाऊँ अंचल की नारियों के जीवन संघर्षों का यथार्थ चित्रण करता है। जया जिस युवक से प्रेम करती है वह झूठे आरोप में फंसा दिया जाता है और उसको उसका वांछित जीवन साथी प्राप्त नहीं हो पाता। इस उपन्यास के माध्यम से कुमाऊं अंचल के ग्रामीण समाज के जन जीवन को चित्रित होने का अवसर भी मिला है,ग्रामीण समाज में भूमि विवाद के कारण होने वाले आपसी रंजिसों के दुष्परिणामों के साथ-साथ आपसी प्रेम भाव, सहयोग की भावना को समाज के सामने उद्घाटित होने का अवसर मिला है।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें